(II) अतिलम्बित मुठभेड़ समूह — इस समूह के सदस्यों में लगातार तथा तीव्र अन्तःक्रियाएँ 24 घंटा से 36 घंटा तक लगातार होते रहते हैं। इस अवधि में रोगियों द्वारा खाने-सोने जैसी क्रियाओं में कम समय देकर अन्य सारी क्रियाएँ साथ रहकर करनी होती हैं। इसके कारण रोगियों में एक प्रकार का दबाव उत्पन्न होता है जिससे रोगियों को कुछ चिकित्सकीय लाभ होता है। सदस्यों द्वारा तीव्र संवेग की अभिव्यक्ति होने लगती है और रोगियों द्वारा एक-दूसरे पर शाब्दिक आक्रमण करने लगते हैं। इसतरह के दबाव के कारण सदस्यों में एक वैयक्तिक अनुभूति उत्पन्न होता है जिससे उन्हें अधिक लाभ होता है। बाद में विश्रांति की अवस्था की उत्पत्ति के पश्चात् अपनापन का भाव पनपता है और समूह के रोगियों में अधिक समय तक साथ रहने की इच्छा होने लगती है। इस अवस्था को प्यार की अवस्था की संज्ञा दी गई है।

(III) नंगा अतिलम्बित मुठभेड़ समूह :— इस भिड़ंत समूह चिकित्सा की मान्यता यह है कि दैहिक अनावरण होने से रोगियों में सांवेगिक प्रकटीकरण होता है। फलतः रोगियों को एक प्रकार का मानसिक आनन्द प्राप्त होता है जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। इसका प्रतिपादन बिन्ड्रीम (Bindrim, 1968) द्वारा किया गया है। इस मुठभेड़ समूह में भाग लेने वाले सभी सदस्य अपने शरीर पर के सारे वस्त्र उतारकर एक-दूसरे के साथ शारीरिक संपर्क करते हैं परंतु लैंगिक क्रिया करने की छूट नहीं होती है। बिन्ड्रीम का मत है कि इस विधि से उन रोगियों को अधिक लाभ होता है जिनमें लैंगिक समस्याएँ होती हैं। इस प्रविधि को बाद में मनोविज्ञानियों द्वारा अनुचित एवं अमानवीय घोषित किया गया है।

(IV) गेस्टाल्ट मुठभेड़ समूह — इस मुठभेड़

समूह विधि का प्रतिपादन फ्रिज पर्ल्स द्वारा किया गया है। इस विधि में गेस्टाल्ट चिकित्सा विधि का उपयोग किया जाता है। फलतः इसे गेस्टाल्ट मुठभेड़ समूह की संज्ञा दी गई है। गेस्टाल्ट चिकित्सा में रोगियों की वर्तमान क्रियाओं पर अधिक बल डाला जाता है तथा चिकित्सक कैलव्या को इन क्रियाओं का दायित्व अपने ऊपर लेने के लिए उन्हें अवगत कराता है। इस मुठभेड़ समूह चिकित्सा का मूल उद्देश्य यही होता है कि यह कार्य एक समूह में किया जाता है। चिकित्सक समूह के सदस्यों के साथ बैठकर प्रश्न पूछते हैं और उसका उत्तर प्राप्त करते हैं। इस दौरान सदस्यों को अपने भीतर उत्पन्न अनुभूतियों को पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे धीरे-धीरे समूह के सभी सदस्यों की संवेदनशीलता तीव्र हो जाती है और इनमें धनात्मक अंतःशक्ति का विकास होने लगता है।

(5) संव्यवहार विश्लेषण मुठभेड़ समूह :— इस मुठभेड़ समूह चिकित्सा विधि में बर्नी (Berne 1966) द्वारा प्रतिपादित संव्यवहार विश्लेषण चिकित्सा प्रविधि का उपयोग सामूहिक रूप में किया जाता है। संव्यवहार विश्लेषण विधि में एक ही व्यक्ति के भीतर तीन तरह की भूमिका यानि बच्चा, युवा और अभिभावक का विश्लेषण किया जाता है। इस चिकित्सा विधि में अन्य विधियों की भांति व्यक्ति के बारे में गहन अन्तःक्रियाओं का विश्लेषण नहीं किया जाता है। संव्यवहार विश्लेषण मुठभेड़ समूह में शामिल रोगियों के साथ चिकित्सक विभिन्न प्रकार के खेल खेलते समय उनके व्यवहारों को समझकर उन व्यवहारों की व्याख्या करते हैं। यह खेल एक विशेष प्रकार का होता है जिसमें एक खास उद्देश्य छिपा होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु चिकित्सक रोगियों को खेल का अर्थ समझाते हैं। इस प्रक्रिया

Krishna Nand M.A III Sem (3)
6

को बार-बार दुहराने से रोगियों में एक घनिष्ठ संबंध स्थापित होता है और वे एक-दूसरे के साथ ऐसा संबंध बनाने में सक्षम होते कि वे खेल के बंधन से मुक्त होकर स्वस्थ जीवन यापन करने लगते हैं।

(vi) साइनेनोन गेम्स :— यह एक ऐसा मुठभेड़ समूह है जिसमें समूह के सदस्यों को क्रोध और ईर्ष्या का खुला, प्रत्यक्ष एवं बिना किसी तरह के अवरोध्य की अभिव्यक्ति शब्दों में करने के लिए कहा जाता है। इस विधि की विशेषता यह है कि समूह में चिकित्सक स्वयं सम्मिलित नहीं होते हैं। सदस्यों को स्पष्ट निर्देश होता है कि वे केवल शाब्दिक प्रकार कर सकते हैं। यह खेल करीब तीन घण्टों तक जारी रखा जाता है। इसमें से सबसे अधिक आक्रामक व्यक्तियों की पहचान की जाती है। खेल के बाद पाया जाता है कि सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति भावुक समर्थन एवं प्रोत्साहन का वातावरण कायम हो जाता है। एक खेल के उपरान्त दूसरे खेल में सदस्यों को सामान्यतः बदल कर मुठभेड़ या भिड़ंत करवाया जाता है। खेल में जितना ही तीव्र आक्रमता होता है, सदस्यों में सांवेगिक संबंध की मात्रा तथा पारस्परिक भलाई या कल्याण की चिंता उतनी ही अधिक हो जाती है।

प्रभावशीलता — यह माना जाता है कि मुठभेड़ समूह चिकित्सा प्रारूप व्यक्तिगत वर्धन तथा परानुभूति को बढ़ाता है जबकि सामूहिक चिकित्सा का उद्देश्य व्यक्ति में हुए मनोवैज्ञानिक क्षति को सुधारना होता है। अब प्रश्न उठता है कि क्या भिड़ंत समूह अपने उद्देश्य में सफल या प्रभावशाली रहा? इस संदर्भ में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए कुछ अध्ययनों एवं समीक्षाओं से ज्ञात होता है कि इस प्रारूप का धनात्मक

Krishna Nand M.A III Sem (4)

चिकित्सीय प्रभाव होता है। गिब (Gibb, 1970) द्वारा सौ से अधिक समूह अध्ययनों की समीक्षा के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ऐसे समूह में धनात्मक चिकित्सीय प्रभाव होता है। लाइबरमैन तथा उनके सहयोगियों (1973) ने यह बतलाया है कि मिलन समूह में भाग लेने वाले सदस्यों में से करीब 78% ने अपने में धनात्मक परिवर्तन महसूस पेशेवर चिकित्सकों द्वारा किए तरह के प्रविधि को अपनाया गया है। ओरम तथा उनके सहयोगियों (Orum et al. 1970) ने भी अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि समूह के नेता के व्यवहार द्वारा समूह के बातचीत का विषय निर्धारित होता ही है। साथ-ही-साथ सदस्यों में यह अनुभूति भी उत्पन्न होती है कि वे कहीं एक समूह से प्रभावित हुए हैं। लाइबरमैन (Liberman, 1994) ने करीब दो दर्जन मिलन समूहों के कुछ अध्ययनों से अधिक की समीक्षा किया और बतलाया कि कई ऐसे समूहों भाग लेने वाले व्यक्तियों ने अपने भीतर धनात्मक परिवर्तन होने की बात बतलाई है।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मिलन समूह की प्रभावशीलता या सफलता है। फलतः इसमें भाग लेने वाले सदस्यों के भाव एवं चिंतन में पर्याप्त परिवर्तन होते पाया जाता है।

The end